अनुक्रमणिका

भूमिका **i-v**

पहला अध्याय:- देह व्यापार : अवधारणा, इतिहास और सामजिक परिप्रेक्ष्य **1-31**

1.1: देह व्यापार से आशय

1.2: देह व्यापार और देह शोषण

1.3: देह व्यापार : इतिहास से वर्तमान तक

1.4: देह व्यापार का सामाजिक परिप्रेक्ष्य

1.5: देह व्यापार का ढाँचा :

- स्त्री-देह
- ग्राहक
- दलाल
- कोठा मालकिन
- पुलिस-प्रशासन

दूसरा अध्याय:- 'ये कोठेवालियाँ' और 'गाड़ीवालों का कटरा' में अभिव्यक्त देह व्यापार के कारण **32-57**

2.1: आर्थिक परिस्थितियाँ

2.2: सामजिक एवं धार्मिक अंधविश्वास

2.3: सामंत और प्रभुत्वशाली वर्ग की विलासी प्रवृत्ति

2.4: देह व्यापार में दलालों की भूमिका

तीसरा अध्याय:- 'ये कोठेवालियाँ' और 'गाड़ीवालों का कटरा' में देह व्यापार करने वाली स्त्रियों की स्थिति **58-90**

3.1: देह व्यापार में लिप्त स्त्रियाँ : वासनापूर्ति के साधन के रूप में

3.2: देह व्यापार में लिप्त स्त्रियाँ : माँ की भूमिका

3.3: देह व्यापार में लिप्त स्त्रियाँ : व्यवसाय की संचालिका के रूप में

3.4: देह व्यापार करने वाली स्त्रियों की मानसिक स्थितियाँ

3.5: देह व्यापार में लिप्त स्त्रियाँ : पुलिस और प्रशासन

चौथा अध्याय:- देह व्यापार की भाषा **91-107**

4.1: देह व्यापार करने वाली स्त्रियों की भाषा

4.2: ग्राहकों की भाषा

4.3: कोठा मालकिनों की भाषा

4.4: दलालों की भाषा

उपसंहार:- **108 -110**

संदर्भ ग्रंथ सूची- **111-112**